# जिहाद

## सय्यद कामरान मिर्ज़ा की निबंध श्रृंखला

## “Jihad” का

## हिन्दी रूपांतर: अष्टावक्र

## संपादक: तुफ़ैल चतुर्वेदी

जिहाद के दौरान ग़ुलाम बनायी गयीं यजीदी युवतियाँ

*लेखक के कुछ शब्द: जिहाद पर इतना लंबा निबंध लिखने के लिए मैं पाठकों से क्षमा चाहता हूँ। इस्लामी इतिहास में जिहाद एक अत्यंत गंभीर विषय है। इस्लामी जिहाद की व्याख्या करने वाला बहुमूल्य साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, परंतु इस आलेख का न्यूनतम शब्दों में सीमित रखने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए उसे शामिल नहीं कर सका। यद्यपि, मैंने जिहाद से संबंधित कई महत्वपूर्ण साहित्यों के माध्यम से इसे यथासंभव विश्वसनीय बनाने का प्रयास किया है। कुछ इस्लामी अतिवादी, जिहाद की अपनी भ्रामक तथा अस्पष्ट व्याख्या से पश्चिमी पाठकों को मूर्ख बनाने की चेष्टा कर रहे हैं। मैं पाठकों से आग्रह करता हूँ कि वे इस्लामी जिहाद के वास्तविक अर्थ को जानने के लिए धैर्य रखते हुए पूरा लेख पढ़ें।*

11 सितंबर, 2001 की भयंकर घटना एक बड़े तूफ़ान की भांति आयी जिसने इस्लाम के मौलिक स्वरूप को आलोचना के घेरे में ला खड़ा किया। तब से लेकर आज तक पाशंसक विद्या में निपुण इस्लामी विद्वान इस्लाम का रक्षण करने में

व्यस्त हैं। उनके अनुसार इस्लाम को उग्रवादी इस्लामी अतिवादियों में अपहृत कर लिया है। एक लंबे समय तक वे इस्लाम को शांतिपूर्ण धर्म सिद्ध करने की निरर्थक चेष्टा में लगे रहे। अब एक बार फिर वे व्यस्त हैं; इस बार वे जिहाद को एक नई व्याख्या देने में लगे हुए हैं। आज का व्याख्यान, इस्लामी जिहाद के उद्देश्य तथा इसके व्यावहारिक निहितार्थ की गवेषणा पर केंद्रित है।

# जिहाद का अर्थ क्या है?

वेबस्टर डिक्शनरी में जिहाद का अर्थ: पवित्र युद्ध है। क्रूसैड का अर्थ भी पवित्र युद्ध है। सम्पूर्ण मानवता को ज्ञात है कि ऐतिहासिक रूप से जिहाद तथा क्रूसैड रक्त में निमग्न थे। अब फिर क्या कारण है कि इस मोड़ पर हम एक बार फिर बहस कर रहे हैं तथा जिहाद को पुनः परिभाषित कर रहे हैं?

अरबी भाषा में जिहाद का शाब्दिक अर्थ-प्रयास करना तथा संघर्ष करना है। कुछ मुस्लिम विद्वान, आगे बढ़कर जिहाद को निम्न श्रेणियों में वर्गीकृत करते हैं:

1. जिहाद-अन-नफ़्स  अथवा स्वयं के विरुद्ध जिहाद;
2. जिहाद अश-शैतान अथवा शैतान के विरुद्ध जिहाद;
3. जिहाद अल-कुफ्फ़ार अथवा अविश्वासियों के विरुद्ध जिहाद;
4. जिहाद अल-मुनाफ़िक़ीन अथवा मुनाफ़िक़ों के विरुद्ध जिहाद;
5. जिहाद अल-फसीक़ीन अथवा भ्रष्ट मुस्लिमों के विरुद्ध जिहाद।

क्या हम लोगों को जिहाद इन भांति-भांति की व्याख्याओं की भंवर में फंसा कर मूर्ख बना सकते हैं? बिल्कुल नहीं!

सच कहूँ तो मैं अरबी शब्द जिहाद कि भिन्न शाब्दिक अर्थों से अधिक प्रभावित नहीं हूँ। हमें यह अच्छी तरह ज्ञात है कि

प्रत्येक भाषा में, कुछ शब्दों के, प्रयोग के आधार पर, अनेक अर्थ हो सकते हैं। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि

इसका अभिप्राय यह नहीं है कि किसी विशेष शब्द के कुछ भिन्न अर्थों की सहायता से उस शब्द के वास्तविक अर्थ को लोगों की आँखों से ओझल किया जा सकता है, क्योंकि शब्द का अर्थ सदैव उसके व्यावहारिक अथवा परिस्थितिजन्य उपयोग से ही समझा जाता है। जिहाद शब्द को उसके एक शाब्दिक अर्थ 'संघर्ष' के परिपेक्ष्य में देखते हैं। परिस्थिति के अनुसार इस संघर्ष के अनेक रूप हो सकते हैं। संघर्ष आपके मन में हो सकता है, आपके जीवन में हो सकता है, आपके कार्य में हो सकता है, भीड़ के बीच में कार्यालय पहुँचने में संघर्ष हो सकता है अथवा शत्रु से लड़ने में हो सकता है। आप कह सकते हैं: "मैं अपने मन से संघर्ष कर रहा हूँ कि क्या मुझे यह विकल्प स्वीकार करना चाहिए अथवा नहीं; अथवा "मैं अपनी पत्नी से संघर्ष कर रहा हूँ कि हमें अपना घर बदलना चाहिए अथवा नहीं;" अथवा आप कह सकते हैं, "मैं अपने शत्रु के साथ युद्ध लड़ रहा हूँ।" एक सामान्य

व्यक्ति इस शब्द का एक ही अर्थ निकालेगा-संघर्ष (जिसका सामान्य अर्थ सशस्त्र संघर्ष है)। अर्थात इस शब्द का अर्थ परिस्थिति के अनुसार बहुत अधिक बदल सकता है।

कभी-कभी किसी शब्द-विशेष का वास्तविक अर्थ भी किसी परिस्थिति में बारम्बार प्रयुक्त होने से बदल जाता है। मिसाल के लिए एक उर्दू शब्द रजाकार को लेते हैं जिसका अर्थ-राजा का सहायक होता है। यद्यपि, परिस्थिति तथा ऐतिहासिक संदर्भ में इसका अर्थ बहुत अधिक बदल गया। 1971 में बंगाली स्वतंत्रता संघर्ष में (मुक्ति-युद्ध) रजाकारों ने लाखों स्वतंत्रताप्रिय बंगालियों की हत्या, बलात्कार तथा उत्पीड़न किया। अब बांग्लादेश में किसी को रजाकार कहना अच्छा नहीं माना जाता, बल्कि यह हल्के-फुल्के अपमान का एक व्यंजक बन चुका है। यदि आप किसी को रजाकार कहते हो तो वह आपके साथ मारपीट कर सकता है, क्यों? परिस्थिति तथा ऐतिहासिक संदर्भ के प्रभाव ने इस शब्द, रजाकार के अर्थ तथा सूक्ष्म अर्थ दोनों को बदलकर सहायक के स्थान पर एक दुष्ट षड्यंत्रकारी तथा पाँचवाँ स्तम्भ कर दिया। **यही**

**कारण है कि जिहाद के सही अर्थ को समझने के लिए हमें उन परिस्थितियों को तथा ऐतिहासिक संदर्भ को समझना होगा जिसमें यह प्रयुक्त होता आया है।**

मैं जिहाद के अर्थ की खोज के लिए (अ) इतिहास (ब) कुरान के संदर्भ (स) अहदीस में उल्लेख (द) इतिहासकारों तथा इस्लामी विद्वानों की व्याख्याओं का सहारा लूँगा।

## A. जिहाद का ऐतिहासिक अर्थ:

ऐतिहासिक रूप से, जिहाद का अर्थ पवित्र युद्ध (बांग्ला में धर्मयुद्ध) है। 1400 वर्षों से, मुसलमान सदैव जिहाद का अर्थ इस्लामी धर्मयुद्ध के रूप में ही लेते आ रहे थे। सम्पूर्ण इस्लामी विश्व का प्रत्येक इस्लामी विद्वान, मुल्ला, मौलाना, इमाम आदि जिहाद के इस अर्थ पर सहमत होगा। तकनीकी रूप से, जिहाद केवल गैर-मुस्लिम के विरुद्ध युद्ध है (जिहाद अल-कुफ्फ़ार अथवा अविश्वासियों के विरुद्ध युद्ध तथा जिहाद अल-मुनाफ़िक़ीन अथवा ढोंगियों के विरुद्ध युद्ध) क्योंकि

मुसलमानों का आपस में युद्ध करना निषिद्ध है। जिहाद पर इस्लामी विद्वानों ने सैकड़ों पुस्तकें लिखी हैं तथा प्रत्येक व्यक्ति ने निर्विवाद रूप से जिहाद शब्द का उपयोग धर्मयुद्ध के संदर्भ में ही किया है। इस्लामी इतिहास में, 80% से अधिक ग्रंथ पवित्र युद्ध अथवा जिहाद के संदर्भों से भरे हुए हैं। अरब प्रायद्वीप में आरंभिक इस्लाम का प्रसार केवल जिहाद अथवा धर्मयुद्ध से ही हुआ। एक धर्म के रूप में इस्लाम का प्रचार श्रृंखलाबद्ध युद्धों से हुआ-जो रक्षात्मक तथा आक्रामक दोनों प्रकार के थे। रसूल अल्लाह मुहम्मद ने 78 ऐतिहासिक युद्ध लड़े। इन 78 में से केवल एक युद्ध (खंदक की लड़ाई) रक्षात्मक था, शेष विशुद्ध आक्रामक युद्ध थे। क्या मुसलमान सैनिक, सीरिया, ईरान तथा मिस्र एक रक्षात्मक युद्ध लड़ने गए थे? उन महान ऐतिहासिक युद्धों के विषय में क्या कह सकते हैं-उहुद का युद्ध, बदर का युद्ध, खैबर का युद्ध, हुदैबिया की शांति-संधि आदि? क्या ये सभी युद्ध केवल एक वाद-विवाद अथवा वैचारिक संघर्ष मात्र थे? दूसरे शब्दों में क्या यह सभी युद्ध सीने को चीर सक्ने वाली धारदार तलवारों के साथ नहीं लड़े गए थे?

रसूल अल्लाह तथा उनके उत्तराधिकारियों ने बहुदेववादी अरबों, यहूदियों तथा ईसाइयों के विरुद्ध श्रृंखलाबद्ध आक्रामक युद्ध लड़े; इन सभी युद्धों का उद्देश्य बलात इस्लाम थोपना तथा भूमि व भूमि की सम्पत्ति हस्तगत करना था। यद्यपि यह संभव हो सकता है कि रसूल अल्लाह की महानता को देखकर अथवा कुछ अन्य चमत्कारों के कारण कुछ छिटपुट धर्मांतरण हुए होंगे। परंतु अधिकांश धर्मांतरण बलात ही हुआ था तथा अरब की जनता के पास विकल्प की स्वतंत्रता नहीं रह गयी थी। जब मदीना में रसूल अल्लाह मुहम्मद की शक्ति पर्याप्त बढ़ गयी तो यह चलन बना गया कि वह विभिन्न अरब जातियों तथा आस-पड़ोस के देशों में इस्लाम की दावत देते थे-पहले उन्होंने बहुदेववादी अरबों को इस्लाम स्वीकार करने की दावत दी, फिर उन लोगों के विरुद्ध युद्ध किया जिन्होंने इस्लाम स्वीकार करने से इनकार कर दिया। अहले किताब (ईसाई तथा यहूदी) वालों को दावत देने के अनोखा तरीका था, “इस्लाम स्वीकार करो अथवा जज़िया अदा करो अथवा जब तक प्राण हैं युद्ध करो।”

निस्संदेह, दीन-ए-इस्लाम के प्रसार में आक्रामक युद्ध करना एक औचित्यपूर्ण इस्लामी विचारधारा मानी जाती है: अल्लाह के लिए जिहाद। मैं इस्लामी युद्धों पर प्रमाणित इतिहास के सैकड़ों पन्ने लिख सकता हैं जिनमें दसियों हज़ार प्राणों की क्षति हुई है; टनों मानव-रक्त बहा है।

रसूल अल्लाह मुहम्मद इन अनवरत युद्धों में से एक युद्ध में गंभीर रूप से घायल हो गए थे तथा कुछ दांत गंवा बैठे थे। रसूल अल्लाह के चाचा अमीर हमज़ा भी एक युद्ध में मारे गए तथा उनका शव चीरकर उसके अंदर से यकृत निकाल कर बहुदेववादी अबू सूफियान की पत्नी खा गयी थी। मैं यह पूछ सकता हूँ कि यह किस प्रकार का संघर्ष था जिसमें इतनी शोचनीय घटनाएं घटीं? यह वस्तुतः पवित्र युद्ध अथवा जिहाद ही था तथा किसी भी कोण से यह कोई शांतिपूर्ण संघर्ष नहीं था। यही सच है।

## B. जिहाद के विषय में कुरान क्या कहती है?

कुरान में जिहाद का प्रायः युद्ध के संदर्भ में प्रयोग किया गया है, प्रायः इसके साथ 'फी सबील अल्लाह' भी जुड़ा रहता है। (अल्लाह की राह में) कुरान, हदीस तथा शरिया में जिहाद के केन्द्रीय विचार है, इस आलेख में आगे हम इस विषय पर चर्चा करेंगे।

कुरान की लगभग समस्त आयतें जिनमें घृणा, दबाव, धमकी तथा लालच है, वे किसी न किसी रूप में जिहाद अथवा पवित्र युद्ध से सम्बन्धित हैं।

यहाँ इस बात पर गौर करना होगा कि जब रसूल अल्लाह मुहम्मद मक्का में थे तो उनके बहुत अधिक समर्थक नहीं थे; अतएव वह बहुदेववादियों की तुलना में बहुत अधिक दुर्बल थे। यह वह समय था जब वह कोमल आयतें उतार रहे थे। (पूरे कुरान में अधिक से अधिक 12 ऐसे आयतें हैं जो अपने निहितार्थ में कोमल हैं) इन्हीं चंद आयतों का लाभ उठाकर पाखंडी इस्लामी अतिवादी इस्लाम की सच्चाई को छुपा ले जाते हैं। मदीना में आने के बाद मुहम्मद ने शीघ्रता से

धार्मिक तथा राजनैतिक शक्ति अपने हाथों में ले ली तथा सम्पूर्ण मदीना का नेतृत्व सम्हाल लिया। अब उन्होंने निर्मम तथा घृणा से भरी हुई कुरानी आयतें (इनकी संख्या सैकड़ों में थी) उतारना शुरू कर दिया, जिनका उद्देश्य अपने अनुचरों को युद्ध के लिए उकसाना था।

पवित्र कुरान में, हम सैकड़ों आयतें पा सकते हैं जो गैर-मुस्लिमों के विरुद्ध जिहाद का निर्देश देती हैं, उनमें से कुछ नीचे दी जा रही हैं:

कुरान (9:5): "परंतु जब निषिद्ध महीने व्यतीत हो जाएं तो युद्ध करो और जहाँ कहीं भी पाओ बहुदेववादियों का कत्ल कर दो तथा उन्हें पकड़ लो, घेर लो तथा घात लगाकर उनकी प्रतीक्षा में रहो, परंतु यदि वे पछतावा करें (इस्लाम स्वीकार करें) तथा नियमित नमाज कायम करें तथा नियमित दान दें तब उनके लिए मार्ग खोल दो, क्योंकि अल्लाह सदैव क्षमाशील तथा दयालु है।"

क़ुरान (8:65): “हे रसूल अल्लाह! मोमिनों को युद्ध के लिए प्रेरित करो, यदि तुममे से 20 धैर्यवान तथा दृढ़ होंगे तो वे 200 पर विजय प्राप्त करेंगे; यदि 100 होंगे तो वे 1,000 काफ़िरों (जो मानना नहीं चाहते) पर विजय प्राप्त करेंगे।”

क़ुरान (2:216): तुम्हारे लिए युद्ध अनुशंसित है तथापि तुम इससे मुंह फेर रहे हो। ऐसा हो सकता है कि जो तुम्हें पसंद नहीं हो, वह वास्तव में तुम्हारे लिए अच्छा हो।

क़ुरान (2:191): “और जहाँ कहीं तुम उन्हें पाओ, मार डालो तथा उन्हें वहाँ से निकाल बाहर करो जहाँ से उन्होंने तुम्हें निकाला है.. यह उन लोगों के लिए पुरस्कार है जो दीन को कुचलते हैं।”

क़ुरान (9:29): “उन लोगों से तब तक युद्ध करो, जो अल्लाह अथवा कयामत के दिन में विश्वास नहीं करते, न ही उन वस्तुओं को निषिद्ध करते जो अल्लाह तथा उसके रसूल ने निषिद्ध की हैं, न ही सच्चे दीन का संज्ञान लेते हैं, चाहे वे पुस्तक वाले हों (अहले किताब), जब तक वे समर्पण करके

जज़िया अदा न करने लगें तथा स्वयं को नीचा न समझने लगें।"

कुरान (48:20): ".. अल्लाह ने तुम्हें बहुत अधिक लूट का माल (युद्ध में प्राप्त सम्पत्ति) देने का वादा किया है जो तुम पराजित काफ़िरों से लूटोगे।"

कुरान (8:38) "और उनसे युद्ध करो जब तक कि कोई फ़ितना न रहे।" (फ़ितना का अर्थ आज के धूर्त मुस्लिम बुद्धिजीवी अत्याचार अथवा विद्रोह बताते हैं, वस्तुतः अली सिना के अनुसार इसका मूल अर्थ 'असहमति' है, अर्थात, अल्लाह व उसके रसूल के अनुदेशों के प्रति असहमति अथवा एतराज़)

कुरान (8:12):-मैं अविश्वासी अथवा काफ़िरों के हृदय में आतंक पैदा कर दूंगा: उनकी गर्दन काट डालो, उनकी उंगलियों का छोर काट डालो।"

कुरान (8:15,16):- “हे मोमिनों! जब तुम अविश्वासी काफ़िरों से युद्ध में सामना करो तो उनको कभी भी पीठ नहीं दिखाओ। यदि तुममें से कोई उन्हें पीठ दिखाएगा, सिवाय उस स्थिति के जब यह रणनीति का हिस्सा हो अथवा अपनी सेना में वापस आने की कवायद हो, वह अल्लाह के क्रोध का निशाना बनेगा तथा उसका गंतव्य जहन्नुम होगा जो एक वास्तव में एक बहुत बुरी जगह है।”

कुरान (9:111): “अल्लाह ने मोमिनों से उनके प्राण तथा उनकी संपत्ति खरीद ली है तथा इसके बदले में उन्हें जन्नत के बाग़ मिलेंगे: वे अल्लाह के लिए लड़ेंगे, कत्ल करेंगे तथा कत्ल होंगे:यह एक सच्चा वादा है जो इंजील, तौरात तथा कुरान में मोमिनों के साथ किया गया है।”

कुरान (9:73): “हे रसूल अल्लाह! काफ़िरों तथा मुनाफ़िक़ों के विरुद्ध युद्ध करो! उनके प्रति निर्मम रहो। उनकी अंतिम नियति जहन्नुम है, जो यात्रा का एक दुर्भाग्यपूर्ण अंत है।”

कुरान (9:123): “हे मोमिनों! उन काफ़िरों से युद्ध करो जो तुम्हारे आसपास हैं तथा उनके प्रति कठोर रहो तथा यह जान लो कि अल्लाह उनके साथ है जो अल्लाह के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करते हैं।”

कुरान (4:95): “हे मोमिनों! क्या मैं तुम्हें एक ऐसा सौदा दिखाऊँ जो तुम्हें दर्दनाक अंत से बचा सकता है? तुम्हें अल्लाह तथा उसके रसूल पर विश्वास करना चाहिए तथा अपने प्राणों तथा संपत्ति के बल पर अल्लाह के लिए संघर्ष करना चाहिए। अल्लाह ऐसे लोगों को उच्चतर श्रेणी में रखता है जो उसके हित के लिए संघर्ष तथा युद्ध करते हैं, बजाय कि उन लोगों के जो अपने घरों में बैठे रहते हैं।”

## C. अहदीस में जिहाद (हदीस के बहुवचन को अरबी भाषा में अहदीस कहते हैं)

सही अहदीस में अल्लाह की राह में जिहाद करना व्यापक रूप से अनुशंसित किया गया है। इस्लाम की प्रमुख अहदीस में से सर्वप्रमुख सहीह बुखारी के कुल 9 खंडों में से चौथे खंड का एक तिहाई में वास्तविक मैदानी युद्ध की बात की गयी है। हज़ारों सही अहदीस हैं जो केवल जिहाद की बात करती हैं- इस्लाम का पवित्र युद्ध। इस लघु निबंध में मैं उन सभी का समावेश नहीं कर सकते ताकि संक्षिप्तता की मर्यादा कायम रहे। तथापि, मैंने उनमें से कुछ का अवश्य उल्लेख करूंगा। कुछ दृष्टांत अधोलिखित हैं:

सही बुखारी #35 पृष्ठ-102: रसूल अल्लाह ने कहा, “जो युद्ध के लिए निकल पड़ा है, अल्लाह उसका संरक्षक है। क्योंकि वह युद्ध में इसलिए शामिल हुआ है कि उसे अल्लाह तथा उसके रसूल में पूर्ण विश्वास है। अल्लाह उसे समृद्धि देगा तथा लूट का बहुत सा माल देगा जिसके साथ वह घर लौटेगा अथवा वह शहीद होकर जन्नत जाएगा।”

सही बुखारी: खंड-4, पुस्तक-52, संख्या-46: अबू हुरैरा के हवाले से कहा गया है: मैंने अल्लाह के रसूल को यह कहते हुए सुना: "अल्लाह की राह में मुजाहिद की मिसाल-तथा अल्लाह बेहतर जानता है कि उसकी खातिर कौन संघर्ष करता है-एक ऐसा व्यक्ति है जो निरंतर उपवास तथा प्रार्थना करता है। अल्लाह यह सुनिश्चित करता है कि वह मुजाहिद को जन्नत में प्रविष्ट करे यदि वह युद्ध करते हुए मारा जाता है अन्यथा वह इनामों तथा लूट के समान के साथ अपने घर सुरक्षित पहुँचेगा।"

सही बुखारी: खंड-4, पुस्तक-52, संख्या-53: अनस बिन मलिक के हवाले से कहा गया है: रसूल अल्लाह ने कहा, "कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं होगा जो मरने के बाद अगली दुनिया में अल्लाह से पुरस्कार प्राप्त करता है, इस विश्व में दोबारा आना चाहेगा चाहे उसे सम्पूर्ण विश्व तथा इसका वैभव दे दिया जाए, सिवाय शहीद के जो शहादत की श्रेष्ठता को देखते हुए, इस विश्व में दोबारा आना चाहेगा तथा अल्लाह की खातिर एक बार फिर शहीद होना चाहेगा।"

सही बुखारी: खंड-4, पुस्तक-52, संख्या-48: अनस बिन मलिक बताते हैं: रसूल अल्लाह ने कहा: “अल्लाह की राह में एक छोटा सा प्रयास, (युद्ध) चाहे वह अपराह्न में अथवा पूर्वाह्न में किया गया हो, सम्पूर्ण विश्व तथा इसके वैभव से श्रेयस्कर है। जन्नत में एक धनुष अथवा चाबुक जितनी जगह भी सम्पूर्ण विश्व तथा इसके वैभव से श्रेयस्कर है। यदि जन्नत से कोई हूर धरती के प्राणियों के सम्मुख प्रकट होगी तो वह धरती तथा जन्नत के मध्य के स्थान को प्रकाश तथा मनभावन सुरभि से भर देगी तथा उसके सर का मुकुट सम्पूर्ण विश्व तथा इसके वैभव से बेहतर है”

सही बुखारी: खंड-4, पुस्तक-52, संख्या-44: अबू हुरैरा से रिवायत है: एक व्यक्ति अल्लाह के रसूल के पास आया और कहा, “मुझे कोई ऐसा कार्य बताओ जो पुण्य की दृष्टि से जिहाद से बेहतर हो।” रसूल अल्लाह ने उत्तर दिया, “मुझे ऐसे किसी कृत्य का पता नहीं है।” फिर उन्होंने आगे कहा, “क्या तुम मस्जिद में घुसकर अनवरत नमाज पढ़ते रहोगे

तथा निरंतर उपवास करते रहोगे, जब कि मुस्लिम योद्धा, युद्ध के मैदान में युद्ध कर रहे होंगे?" व्यक्ति ने फिर पूछा, ""परंतु ऐसा कौन कर सकता है।" अबू हुरैरा आगे बयान करते हैं, "मुजाहिद (अर्थात मुस्लिम योद्धा) को उसके घोड़े के कदमों के निशान के लिए भी इनाम दिया जाता है, जब वह लंबी रस्सी में बंधा हुआ (चरने के लिए) आगे आने की चेष्टा करता है।"

सही बुखारी: खंड-4, पुस्तक-52, संख्या-49: समूरा द्वारा बयान किया गया: रसूल अल्लाह ने कहा, "गत रात्रि दो पुरुष मेरे पास आए (स्वप्न में) तथा उन्होंने मुझे एक वृक्ष पर चढ़ने के लिए कहा तथा मुझे एक श्रेष्ठतर तथा उच्चतर घर में प्रविष्ट कराया, इससे बेहतर घर मैंने पहले नहीं देखा था। उनमें से एक ने कहा, 'यह घर शहीदों का है।"

सही बुखारी: खंड-4, पुस्तक-52, संख्या-50: अनस बिन मलिक: रसूल अल्लाह ने कहा, "अल्लाह की राह में एक

छोटा सा प्रयास (युद्ध) चाहे वह अपराह्न में हो अथवा पूर्वाह्न में हो, विश्व तथा विश्व के वैभव से बेहतर है।"

सही बुखारी: खंड-4, पुस्तक-52, संख्या-42: इब्न अब्बास ने बयान किया: रसूल अल्लाह ने कहा, "विजय (मक्का विजय) के बाद कोई हिजरत (मक्का से मदीना का उत्प्रवास) नहीं होनी है, परंतु जिहाद तथा सदिच्छा कायम रहेगी तथा यदि तुम्हें जिहाद के लिए बुलाया जाए (किसी मुस्लिम शासक द्वारा) तो तुरंत जाओ।"

सही बुखारी: खंड-4, पुस्तक-52, संख्या-54: अबू हुरैरा बयान करते हैं: रसूल अल्लाह ने कहा, "उसकी सौगंध जिसके हाथों में मेरे प्राण हैं! यदि मोमिनों में से कुछ लोग ऐसे न होते जो मुझसे पीछे रहना पसंद नहीं करते तथा जिन्हें मैं कोई सवारी (ऊंट अथवा घोड़ा) नहीं दे सकता, तो मैं अल्लाह के रास्ते में निकलने वाली किसी भी सरिया (काफ़िरों पर हमला करने वाली सेना की टुकड़ी) के पीछे कभी नहीं रहता। उसकी सौगंध जिसके हाथों में मेरे प्राण हैं,

मैं अल्लाह की खातिर शहीद होना पसंद करूंगा तथा फिर जीवित होकर फिर शहीद हो जाऊंगा तथा फिर जीवित होकर फिर शहीद हो जाऊंगा तथा फिर जीवन होकर फिर शहीद हो जाऊंगा।"

सही बुखारी: खंड-4, पुस्तक-52, संख्या-55: अनस बिन मलिक बताते हैं: रसूल अल्लाह ने कहा, "ज़ैद ने झण्डा थामा तथा शहीद हुआ फिर जाफ़र ने थामा तथा शहीद हुआ फिर अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने झण्डा थामा तथा शहीद हुआ फिर खालिद इब्न अल-वालिद ने झण्डा थामा यद्यपि उसे सेनापति नहीं बनाया गया था तथापि, अल्लाह ने उसे विजयी बनाया।" रसूल अल्लाह ने आगे कहा, "हमें अच्छा नहीं लगेगा यदि वे हमारे साथ हों।" अय्यूब, एक अन्य आख्यानक ने कहा, "अथवा पैगंबर ने आंसू बहाते हुए कहा, 'उन्हें हमारे साथ रहना अच्छा नहीं लगेगा।"

सही बुखारी: खंड-4, पुस्तक-52, संख्या-61: अनस बिन मलिक बताते हैं: मेरे चाचा अनस बिन अन-नद्र बदर के युद्ध

में अनुपस्थित थे। उन्होंने कहा, "हे रसूल अल्लाह! मैं बहुदेववादियों के विरुद्ध प्रथम युद्ध में अनुपस्थित था। (अल्लाह की सौगंध) यदि अल्लाह ने मुझे बहुदेववादियों के साथ युद्ध का एक अवसर दिया तो निस्संदेह अल्लाह युद्ध में मेरी वीरता देखेगा।" उहुद के युद्ध के दिन जब मुसलमानों ने पीठ दिखायी और भाग खड़े हुए तो उसने कहा, "हे अल्लाह! मैं आपसे इन लोगों (मुस्लिम साथियों) के कृत्य के लिए क्षमा माँगता हूँ तथा इन लोगों (बहुदेववादियों ने) ने जो कुछ भी किया, मैं उसकी निंदा करता हूँ।" तब फिर वह आगे बाधा और उसे साद बिन मुआध मिला। उसने साद से कहा, "हे साद बिन मुआध! अन-नद्र के खुदा (अल्लाह) की सौगंध, जन्नत! मैं उहुद के पर्वतों की ओर से आती हुई जन्नत की सुगंध को सूंघ रहा हूँ।" बाद में साद ने बताया, "हे रसूल अल्लाह! मैं वह नहीं पा सकता जो अनस बिन नद्र ने पाया। हमने देखा कि उसके शरीर पर तलवार तथा तीरों के कुल 80 घाव थे। हमने उसे मृत पाया तथा उसका शरीर इतना अधिक क्षत-विक्षत था कि उसकी बहन के सिवा,

जिसने उसे उसकी उंगलियों से पहचान, और कोई भी उसे नहीं पहचान सका।"

सही बुखारी: खंड-4, पुस्तक-52, संख्या-63: अल-बारा बताते हैं: एक व्यक्ति, जिसका चेहरा लोहे के कवच से ढँका था, रसूल अल्लाह के पास आया और कहा, "हे रसूल अल्लाह! क्या मैं युद्ध करूँ अथवा पहले इस्लाम स्वीकार करूँ? रसूल अल्लाह ने उत्तर दिया, "पहले इस्लाम स्वीकार करो फिर युद्ध करो।" तब उसने इस्लाम स्वीकार किया तथा युद्ध में शहीद हो गया। अल्लाह के रसूल ने कहा, " एक छोटा कार्य, परंतु उसका महान पुरस्कार" (उसने इस्लाम स्वीकार करने का एक छोटा कार्य किया परंतु उसे प्रचुर पुरस्कार प्राप्त हुआ)

सही बुखारी: खंड-4, पुस्तक-52, संख्या-64: अनस बिन मलिक बताते हैं: हारथा बिन सुराका की माँ उम्म अर-रुबाई बिन्त अल-बारा रसूल अल्लाह के पास आयी और कहा, "हे रसूल अल्लाह, क्या तुम मुझे हारथा के विषय में बता सकते

हो?" बदर के युद्ध के दिन हारथा की किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा छोड़े गए तीर के लगने से मृत्यु हो गयी थी। महिला ने यह भी पूछा, "यदि वह जन्नत में है तो मैं धीरज रख लूँगी, अन्यथा मैं उसके लिए पीड़ा के साथ विलाप करूंगी।" रसूल अल्लाह ने उत्तर दिया, "हे हारथा की माँ! जन्नत में बाग़ हैं तथा तुम्हारा पुत्र फ़िरदौस अल-आला (जन्नत की श्रेष्ठतम स्थली अथवा श्रेष्ठतम जन्नत) में है।" {यह अज्ञानी, निरीह माँ के साथ क्या इससे बड़ा धोखा हो सकता है जिसने अभी-अभी अपने पुत्र को जिहाद में खोया है। यह धोखा देने वाला हमार कृपालु रसूल अल्लाह है)

मिशकात अल-मसाबिह, अनुवादक जेम्स रॉबसन (लाहौर: अशरफ, 1975) खंड-1: 807: अबु-अब्बास ने रसूल अल्लाह के हवाले से बताया: "कोई भी व्यक्ति, जिसके कदम अल्लाह की राह में धूल से सने होंगे, जहन्नुम नहीं जाएगा।" बुखारी ने भी इसे अग्रप्रेषित किया।

मिशकात अल-मसाबिह, खंड-1: 814: अल-मिकदम बिन मादिकरीब ने सूचित किया कि अल्लाह के रसूल ने ऐसा कहा: “शहीदों को 6 अच्छी वस्तुएं अल्लाह से मिलती हैं: उसके रक्त के प्रथम बिन्दु पर ही उसके सारे गुनाह माफ़ हो जाते हैं, उसे जन्नत में उसका स्थान दिखा दिया जाता है, वह कब्र के दण्ड से बच जाता है, वह सबसे बड़े उत्पीड़न से बच जाता है, उसके सर पर माणिक्य का आदरसूचक किरीट रखा जाता है जो विश्व तथा उसकी निधि से बेहतर है, उसका विवाह 72 कुँवारी स्त्रियों से कर दिया जाएगा जिनकी आँखें गाढ़ी काली होंगी, वह अपने 70 रिश्तेदारों की पैरवी करेगा (जन्नत में प्रविष्ट कराने के लिए)।” तिरमिज़ी तथा इब्न माजाह ने इस हदीस को हम तक पहुंचाया है।

## D. इस्लामी इतिहासकारों/विद्वानों/दार्शनिकों की दृष्टि में जिहाद

हमें जिहाद के ऊपर प्रख्यात इस्लामी विद्वानों की लिखी पुस्तकें मिल सकती हैं। ऐतिहासिक घटनाओं के कुछ

उदाहरण तथा उन पर की गयी टिप्पणियाँ इस अवधारणा की नींव रखने के लिए पर्याप्त होंगी कि इस्लाम के इतिहास में जिहाद मूलतः काफ़िरों के विरुद्ध एक पवित्र युद्ध ही है। कुछ उदाहरण अधोलिखित हैं:

अपनी पुस्तक, "Jurisprudence in Muhammad's Biography" में अल अज़हर विश्वविद्यालय के विद्वान डॉक्टर मुहम्मद सईद रमादान अल-बूती ने लिखा:

"इस्लामी न्यायिक विधान अथवा न्याय शस्त्र में जिहाद मूलतः एक आक्रामक युद्ध है। यह प्रत्येक आयु वर्ग के मुसलमान का कर्तव्य है जब उसके पास आवश्यक सैन्य शक्ति उपलब्ध हो जाए। यह वह चरण है जब जिहाद अथवा पवित्र युद्ध अपने अंतिम रूप में आता है। इसे ध्यान में रखते हुए रसूल अल्लाह ने कहा, "मुझे अल्लाह से आदेश मिला है कि मैं लोगों से तब तक युद्ध करूँ जब तक वे अल्लाह तथा उसके संदेश में विश्वास न करने लगें।"(Page 134, 7th edition)

अल अज़हर विश्वविद्यालय के विद्वान, डॉक्टर बूती उसी पुस्तक के पृष्ठ 263 में लिखते हैं: “रसूल अल्लाह ने अपने अनुचरों की सैन्य टुकड़ियों को विभिन्न अरब जातियों के पास भेजा जो अरब प्रायद्वीप के विभिन्न भागों में फैली हुई थीं। इस सैन्य अभियान का उद्देश्य इन जातियों को इस्लाम के झंडे तले लाना था। यदि यह जातियाँ सकारात्मक उत्तर नहीं देती थीं तो मुसलमान उनका कत्ल कर देते थे। यह सब कुछ हिजरी के सातवें वर्ष में हुआ। कुल 10 सैन्य टुकड़ियाँ भेजी गयीं थीं।”

बेदावी अथवा बदावी ने अपनी पुस्तक (The lights of Revelation,page-252) में लिखा: “यहूदियों तथा ईसाइयों से युद्ध करो क्योंकि वे अपने दीन के मूल से फिर गए हैं तथा वे सच्चे दीन (इस्लाम) में विश्वास नहीं करते, जिसके आने के बाद सारे दीन रद्द हो गये। उनसे तब तक युद्ध करो जब तक वे झुक कर तथा अपमानित होकर जज़िया अदा न करने लगें।”

अपनी पुस्तक (The Jurisprudence in Muhammad's Biography, published in Egypt) में ही एक अन्य स्थान पर अल-बूती कहते हैं: “इस्लाम में जिहाद की विचारधारा, आक्रामक अथवा रक्षात्मक युद्ध की बात नहीं करती। इसका लक्ष्य अल्लाह के कौल की स्तुति करना तथा इस्लामी समाज का निर्माण करना तथा पृथ्वी पर अल्लाह का साम्राज्य स्थापित करना, चाहे इसके लिए कोई भी उपाय अमल में लाया जाए। यह उपाय आक्रामक युद्ध भी हो सकता है। जिहाद करना पूरी तरह से वैध है।”

इब्न हिशम अल-सुहैली अपनी प्रसिद्ध पुस्तक (Al-Rawd al-Anaf, page-50, 51) में लिखते हैं: "अरब प्रायद्वीप में दो धर्म एक साथ नहीं रह सकते।” अतएव सऊदी सरकार ने, किसी अन्य धर्म के लिए अपने धार्मिक प्रतीकों के प्रदर्शन पर अथवा धर्मप्रचार पर रोक लगा रखी है। इस्लाम कितना सहिष्णु तथा शांतिपूर्ण धर्म है।

प्रख्यात मिस्री विद्वान, सय्यद क़ुतुब (Milestones,Revised Edition, chapter. 4 "Jihad in the Cause of God") जिहाद के विकास में चार चरणों को का उल्लेख करते हैं:

1. मदीना प्रवास से पूर्व जब आरंभिक मुस्लिम मक्का में थे तो अल्लाह ने उन्हने युद्ध करने की अनुमति नहीं दी थी;
2. फिर मुसलमानों को अनुमति दी गयी कि वे उत्पीड़को के विरुद्ध युद्ध करें;
3. फिर अल्लाह ने मुसलमानों को आदेश दिया कि वे उनसे युद्ध करें जो उनसे युद्ध करते हैं।
4. फिर अल्लाह ने मुसलमानों को आदेश दिया कि वे प्रत्येक बहुदेववादी से युद्ध करें।

सय्यद क़ुतुब के विचार में प्रत्येक अगला चरण पिछले चरण को प्रतिस्थापित करता है; इस हिसाब से चौथा चरण ही

अंतिम व स्थायी है तथा यह जिहाद के सम्बन्ध में इससे पूर्व की परिभाषाओं को प्रतिस्थापित करता है। जिहाद के व्यापक तथा स्थायी स्वरूप के औचित्य के लिए वह निम्न कुरानी आयतों का उद्धरण देते हैं:

कुरान: 4:74-32: उन्हें अल्लाह के मार्ग पर चलते हुए युद्ध करना चाहिए जिन्होंने सांसारिक जीवन की, परलोक के जीवन की खातिर, तिलांजलि दे दी है तथा जो भी अल्लाह के मार्ग पर चलते हुए युद्ध करता है तथा युद्ध करते हुए मारा जाता है अथवा विजयी होता है, उसके लिए हमने (अल्लाह) बहुत अधिक पुरस्कार रखें हैं।

कुरान: 8:38-40: और उनसे युद्ध करो जब तक कोई फ़ितना (रसूल अल्लाह के विचारों से असहमति) न रह जाए तथा अल्लाह का धर्म पूरी तरह छा जाए।

कुरान: 9:29-32: अहले-किताब वालों (ईसाई व यहूदी) में से, उनसे युद्ध करो जो अल्लाह में तथा कयामत के दिन में

विश्वास नहीं करते, जो वह निषिद्ध नहीं करते तो अल्लाह तथा उसके रसूल ने निषिद्ध किया है, जब तक कि वे विनीत होकर जज़िया (गैर-मुस्लिमों पर लगने वाला कर) अदा करने पर राज़ी न हो जाएं।

**सय्यद क़ुतुब उन लोगों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं जो जिहाद को मात्र रक्षात्मक युद्ध के रूप में देखते हैं:**

" वे इस्लाम की प्रकृति तथा इसके साथ जुड़े कर्तव्यों से अनजान हैं। इसे (इस्लाम को) यह अधिकार प्राप्त है कि यह मानव स्वतंत्रता के लिए पहल करे। इस कारण जहाँ कहीं भी इस्लामी समाज अस्तित्व में है, जो दिव्य-आदेशों पर चलने वाली एक जीवन शैली है, वहाँ मुसलमानों का यह दिव्य-अधिकार है कि वे आगे बढ़ें तथा राजनैतिक सत्ता पर नियंत्रण स्थापित करें ताकि धरती पर दिव्य जीवन शैली स्थापित हो सके, जब कि आस्था के अन्य पहलू व्यक्तिगत विवेक पर निर्भर हैं।"

## मौलाना मौदूदी का फतवा:

इसी प्रकार, पाकिस्तानी मूल के इस्लामी पुनर्जागरण के लोकप्रिय प्रणेता अबुल आला मौदूदी ने रक्षात्मक तथा आक्रामक जिहाद के अंतर को अस्वीकार कर दिया। इसी प्रकार प्रख्यात आधुनिक पाकिस्तानी विद्वान फ़ज़लुर रहमान ने एक ओर जहाँ कुरान में जिहाद की व्यापक उपस्थिति को स्वीकार किया वहीं आधुनिक क्षमावादी मुसलमानों के उस छद्म वैचारिक आवरण को भी नष्ट कर दिया जिसके साये में वे यह समझाने  की कुचेष्टा में लगे रहते थे कि आरंभिक मुसलमानों को जिहाद विशुद्ध रूप से रक्षात्मक हुआ करता था। (Fazlur Rahman, Islam, University of Chicago Press,1979, p.37)

इस्लाम के विश्वकोश (Encyclopaedia) के अनुसार, **"उस समय भी युद्ध करना एक मुस्लिम का कर्तव्य है जब काफ़िरों की ओर से कोई शुरुआत न की गयी हो।"** {E.Tyan, ―Ðjihad, Encyclopaedia of Islam,

2nd ed. (Leiden: Brill,1965)} रूडोल्फ पीटर्स (Rudolph Peters) के शब्दों में, "जिहाद का अंतिम लक्ष्य काफ़िरों को ग़ुलाम बनाना है तथा कुफ़्र को समाप्त करना है।" (Rudolph Peters, "Jihad", The Encyclopedia of
Religion, New York: Macmillan, 1987, Vol. 8:88-91)

इन सभी मान्य स्रोतों में इस्लाम की उस मौलिक परिकल्पना का प्रतिबिंब है कि **सम्पूर्ण विश्व का प्रभुत्व मुसलमानों के हाथों में होना चाहिए**।

कुरान: 16:101: और जब हम एक आयत, अन्य (पुरानी) आयत के स्थान पर उतारते हैं-और अल्लाह बेहतर जानता है जो उसने अवतरित किया है-तो वे कहते हैं: देखो, मैं आयतें गढ़ रहा हूँ। परंतु उनमें से अधिकांश सच नहीं जानते।

इन आयतों के आधार पर, मुस्लिम समाज में, कुरान की व्याख्या का विचार उभरा, जिसे नासिख (निरस्त करना) कहते हैं जिसमें यह प्रतिपादित किया गया कि आरंभिक शांतिपूर्ण आयतें बाद की हिंसक आयतों से निरस्त हो जाती हैं, अर्थात, जिहाद के विषय में मक्का की आयतें, मदीना की आयतों से निरस्त हो जाती हैं। यह भलीभांति ज्ञात है कि इस्लाम के आरंभिक इतिहास में अधिकांश मुस्लिम विद्वानों ने यह दावा किया था कि कुरान की 9:5 आयत ने, जिसे कभी-कभी तलवार की आयत भी कहा जाता है, कुरान की अनेक शांतिपूर्ण पूर्ववर्ती आयतों को निरस्त कर दिया। इस व्याख्या का अतीत में तथा वर्तमान में मुस्लिम समाज के लिए क्या निहितार्थ था, इसका सार विश्व-विख्यात विद्वान व महान इस्लामी इतिहासकार, समाजशास्त्री व दार्शनिक इब्न खलदुन (1332-1406 ईस्वी) ने प्रस्तुत किया है:

“मुस्लिम समाज में, इस्लामी मिशन की सर्वभौमिकता तथा इस्लामी दर्शन में प्रत्येक व्यक्ति को बहला-फुसला कर अथवा बलात मुसलमान करने के दृढ़ संकल्प के कारण, जिहाद एक

दीनी कर्तव्य बन जाता है। इस कारण इस्लाम में, खिलाफ़त तथा राजसत्ता एकीकृत हैं। जिससे प्रशासक को अपनी शक्ति को दोनों दिशाओं में लगाता है: अर्थात बलपूर्वक अथवा बहला-फुसला कर इस्लाम कुबूल करवाना।" {Ibn Khaldun, The Muqaddimah, trans. by Franz Rosenthal (New York:Pantheon Books Inc., 1958) Vol. 1:473}

नीचे सहीह अल-बुखारी के खंड-1 के प्रखण्ड 24-30 का अर्थ दिया जा रहा है:

अतएव यह हमारा (मुसलमानों का) कर्तव्य है कि हम उस पथ पर चलें जिस पर रसूल अल्लाह (मुहम्मद) चले थे तथा बहुदेववाद तथाकिसी भी रूप में धर्मभ्रष्ट होने से बचें तथा पवित्र कुरान तथा रसूल अल्लाह की परम्परा को अपने सामने मार्ग दिखाने वाली एक मशाल की भांति रखें। हमें अपने भाइयों को शिक्षा देनी है तथा यथासंभव विश्व भर के गैर-मुस्लिमों को यह संदेश देना (इस्लाम का न्योता) है ताकि वे

जहन्नुम की आग से बच सकें। हमें अपने आप को तैयार करना है ताकि हम शत्रु के सामने खड़े रह सकें तथा हमें शक्ति के संसाधन रखने होंगे तथा उपयोगी उद्यमों में प्रतिभागी बनना होगा ताकि हम अपने दीन की रक्षा कर सकें तथा इतने शक्तिशाली हो जाएं कि शत्रु का सामना कर सकें, जैसा महान अल्लाह ने सूरत अल-अनफ़ाल में कहा है। (8:60)

कुरान: 8:60: उनके (काफ़िरों के) विरुद्ध अपने आप को यथाशक्ति सुदृढ़ करो, युद्ध की सामग्री एकत्र करो( आधुनिक संदर्भ में टैंक, गुप्त स्थान, प्रक्षेपक तथा अन्य हथियार) ताकि अल्लाह तथा तुम्हारे शत्रु तथा अन्य लोगों के हृदय में आतंक व्याप्त हो जाए, इन अन्य लोगों के विषय में तुम नहीं जानते, परंतु अल्लाह जानता है। तुम जो कुछ भी अल्लाह की राह में खर्च करोगे वह तुम्हें मिल जाएगा तथा तुम्हारे साथ अन्याय नहीं होगा।

कुरान के अधिकांश अंश स्पष्टतः जिहाद का संज्ञान इस्लाम के हित में किए जाने वाले शारीरिक युद्ध के रूप में ही लेते हैं। इस्लाम की दृष्टि में अल्लाह का साम्राज्य धरती पर कायम करने का यह इस्लामी तरीका है। इसी प्रकार, अहदीस से तथा इस्लामी के आरंभिक का में लिखी गयी मुहम्मद की जीवनियों से भी यह स्पष्ट है कि आरंभिक इस्लामी समाज ने इन कुरान की आयतों का शाब्दिक रूप में ही लिया था। इसलिए ऐतिहासिक दृष्टि से, मुहम्मद के समय से ही जिहाद को शारीरिक युद्ध के रूप में ही अमल में लाया गया ताकि इस्लाम के संदेश को फैलाया जा सके; यही मुस्लिम समाज की वास्तविकता है। अतएव यह आश्चर्य नहीं कि आतंकवादी प्रायः इन्हीं स्रोतों का आश्रय लेकर अपनी आतंकी (ओसामा तथा उसके साथी) गतिविधियों को औचित्य देते हैं। उन्हें शिक्षा देने वाले उलेमाओं का क्या कहना जो उन्हें आतंक के सिद्धांत तथा उसे यथार्थ में उतरने के कौशल के विषय में शिक्षा देते हैं। 11 सितंबर, 2001 में अमेरिका की धरती पर होने वाला आतंकी हमला ओसामा

बिन लादेन जैसे इस्लामी अतिवादियों की जिहादी मानसिकता का जीवंत उदाहरण है।

कुरानी आयतें (जिनका ऊपर उल्लेख हुआ है) तथा उसी प्रकृति के अनेक सही अहदीस, मुसलमानों को इस्लाम की खातिर अपनी मानसिक तथा शारीरिक शक्ति अर्पित करने की प्रेरणा देती हैं। इसलिए दीन के प्रसार के नाम पर, कट्टर मुसलमान योद्धाओं ने पड़ोस के अरब राष्ट्रों जैसे सीरिया, जॉर्डन, फिलिस्तीन, मिस्र, इराक़ तथा गैर-अरब राष्ट्र जैसे भारत, तुर्की, लीबिया, ईरान आदि पर अधिकार करने के उपक्रम में लाखों लोगों की हत्या कर दी। यहाँ तक कि स्पेन भी सैकड़ों वर्षों तक उनके चंगुल में रहा। मुझे आश्चर्य होता है कि क्या वास्तव में ये युद्ध रक्षात्मक थे? क्या इस्लामी योद्धाओं द्वारा एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र पर अधिकार करते समय क्षमा तथा करुणा के प्रतीक के रूप में तलवार का उपयोग किया गया? मुहम्मद की मृत्यु के उपरांत, उनके सहाबी सत्ता प्राप्ति के लिए पाशविक प्रवृत्ति के पारस्परिक युद्धों में उलझ गए।

सारांश में, इस्लामी तलवार से किए गए इस्लामी जिहाद के कारण अरब प्रायद्वीप से सैकड़ों जातियाँ विलुप्त हो गयीं। हज़ारों लोग अनाथ हो गए, हज़ारों स्त्रियाँ विधवा हो गयीं। हज़ाज बिन यूसुफ़ ने सैकड़ों हज़ार सहाबियों की हत्या कर दी। इब्न खताल की काबा में हत्या कर दी गयी। बाद में अब्दुल्ला बिन ज़ुबैर की भी काबा में हत्या की गयी। इस्लाम के प्रथम गृह युद्ध की समाप्ति के समय तक सभी बदरी सहाबी (बदर के युद्ध में मुहम्मद के साथ लड़ने वाले) कत्ल किए जा चुके थे। प्रथम तीन गृह युद्धों की समाप्ति तक सभी सहाबी मारे जा चुके थे; "इसने मुसलमानों की समस्त शक्ति को सोख लिया था" (बुखारी)। हज़रत अली इब्न अबू तालिब तथा बीबी आएशा बिन्त अबू बक्र के मध्य जमाल के युद्ध में लगभग 10.000 मुस्लिम मारे गए। इस्लामी विद्वान डॉक्टर अबू ज़ायद शालाबी ने अपनी पुस्तक के पृष्ठ-75 में यह दावा किया है कि मई 633 में, अलीस अथवा उलैस के युद्ध में जो इराक़ की सीमाओं पर लड़ा गया, महान सेनानायक खालिद इब्न अल वालिद ने 70,000 इरानियों

की हत्या कर दी थी। इसी प्रकार जुलाई 657 में, हज़रत अली तथा हज़रत मुआविया के मध्य सीरिया में, सिफिन की लड़ाई में भी लगभग 70,000 लोग मारे गए।

जिहाद के चलते हज़ारों गैर-मुस्लिम मारे जा चुके हैं। रसूल अल्लाह मुहम्मद की मृत्यु के उपरांत, रसूल के चार प्रिय शिष्य उस इस्लामी साम्राज्य के शासक बने जिसकी स्थापना रसूल अल्लाह ने की थी। इन शिष्यों को पवित्र खलीफ़ा कहा जाता है। इन चार खलीफ़ाओं में से तीन की नृशंसता से हत्या कर दी गयी थी तथा केवल एक की वृद्धावस्था के कारण स्वाभाविक मृत्यु हुई थी, उनका (अबू बक्र) का शासन काल भी बहुत कम अवधि (2 वर्ष) का था। अल्लाह हु अकबर की ध्वनि के साथ कर्बला में खून की बाढ़ आ गयी (680 ईस्वी)। क्या यह इस कारण था कि इस्लामी तलवार करुणा का प्रतीक है? सच तो यह है-तलवार कभी भी करुणा का प्रतीक नहीं हो सकती!

## वैश्विक लक्ष्य

मैंने बहुत से बहुमूल्य उद्धरण संदर्भों के साथ दिए हैं जिनसे एक विशिष्ट तथा अनोखा चित्र उभरता है जो विश्व के अन्य एकेश्वरवादी धर्मों में नहीं है। विश्व के किसी अन्य धर्म के विपरीत, इस्लाम के लक्ष्य में गुप्त निहितार्थ हैं। इस्लाम में, संसार भर के लोगों में, दीन का प्रसार करना एक पवित्र तथा अनिवार्य कर्तव्य माना जाता है। अंतिम अभीष्ट लक्ष्य सम्पूर्ण मानवता को धर्मांतरित करके इस्लाम की छत्रछाया में लाना है, जो अल्लाह का एकमात्र सच्चा धर्म है। इस अभीष्ट की प्राप्ति के लिए दो वर्ग कड़ा परिश्रम कर रहे हैं। ये दो वर्ग हैं:

A. आतंकवादी मुल्लाह जो इस्लाम की मौलिक शिक्षाओं पर अक्षरशः चलना चाहते हैं।

B. पश्चिमी देशों में रहने वाले शिक्षित/प्रबुद्ध मुसलमान {पश्चिमी देशों में मुस्लिम उम्मा का प्रतिनिधित्व करने वाले मुस्लिम संगठन: AMC (Association of Muslim Chaplains),CAIR (Council on American-Islamic Relations), ICNA ((Islamic Circle of North America), ISNA (Islamic Society of

North America), NABIC (North American Bangladeshi Islamic Community) इत्यादि}

यहाँ हम तीसरे वर्ग के मुसलमानों को (जो अल्लाह से डरने वाले सीधे-सादे मुसलमान हैं जिनकी कुल मुसलमानों में संख्या का अनुपात लगभग 70-80% है) छोड़ देते हैं,

दोनों वर्ग A तथा B में एक लक्षण उभयनिष्ठ है: पर्याप्त संख्या में लोगों को मुसलमान करना ताकि इस्लामी शरिया अथवा हुदूद कानून (अल्लाह का नियम जैसा अभी अफ़ग़ानिस्तान के तालिबान शासन में है) राष्ट्र के प्रशासन में लागू किया जा सके। यहाँ मुख्य अंतर यह है-वर्ग A, अर्थात आतंकवादी तथा धर्मांध लोग सशस्त्र संघर्ष में (जिहाद, आतंक) में लिप्त हैं तथा वर्ग B (मुख्यतः पश्चिमी राष्ट्रों में रहने वाले मुसलमान) मीठी बातों से तथा शांतिपूर्ण आग्रह के बल पर दीन के शांतिपूर्ण प्रचार-प्रसार में लगा हुआ है; यह वर्ग पाश्चात्य राष्ट्रों के भोले-भाले नागरिकों को मस्जिद से

प्रसारित मक्कारी से भरे हुए उपदेशों के माध्यम से तथा अनेकों वार्षिक तथा अर्द्धवार्षिक इस्लामी सम्मेलनों तथा उम्मा की बैठकों की सहायता से धर्मांतरित कर रहा है। दोनों के मन अभीष्ट को लेकर कोई मतभेद अथवा दुविधा नहीं है- राष्ट्र में इस्लामी शरिया कानून लागू करना।

## निष्कर्ष

हमारे भोले-भाले तथा मन की गहराई में इस्लामी प्रभुत्व की अभिलाषा सँजो कर रखने वाले छद्म इस्लामी अतिवादी, जैसे कि हार्वर्ड विश्वविद्यालय के स्नातक, जिनकी संख्या पूरे विश्व में बहुत अधिक हैं, अथवा कोई भी दूसरा धूर्त इस्लामी अतिवादी जो जिहाद के यथार्थ तथा ऐतिहासिक सत्य को तोड़-मरोड़कर आधुनिक विश्व को मूर्ख बनाना चाहता है, उन्हें अपने धूर्तता पर विचार करना चाहिए; ध्यान रहे यह धूर्तता विश्व भर में फैले हुए शिक्षित मुसलमानों में व्याप्त है। यदि वे जिहाद की कोई चतुराई से भरी हुई नई परिभाषा देना चाहते हैं, जो सौम्य तथा राजनीतिक संतुलन का आभास देती हो, तो बेहतर होगा कि वे पहले कुरान, अहदीस तथा सभी

इस्लामी इतिहास की पुस्तकों को परिवर्तित करें जो विश्व भर के पुस्तकालयों में उपलब्ध हैं। दूसरा विकल्प यह है कि वे इस्लामी इतिहास के समस्त साहित्य को नदी अथवा समुद्र में फेंक कर नष्ट कर दें तथा एक नवीन शांतिपूर्ण इस्लामी इतिहास को स्वयं लिखने में जुट जाएं। यदि वे ऐसा करते हैं तो यह एक सुधरा हुआ इस्लाम होगा, परंतु यह दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि निकट भविष्य में मुल्लाह ऐसा नहीं होने देंगे। इस कारण इस्लामी बुद्धिजीवियों को, जिनमें से अधिकांश NFB (News from Bangladesh) नियमित जाते रहते हैं, अपने मिथ्या घमंड को निगलना होगा तथा अपने कथित आहत अभिमान को भी भूलना होगा। एक कहावत है-कुत्ते भूँकते रहते हैं और कारवां गुजर जाता है। मानवता दृढ़ संकल्प के साथ उस प्रत्येक आस्था से छुटकारा पाना चाहती है जिसने मानव जाति को कुंठित करके रखा हुआ था तथा कभी भी उसे यह अवसर नहीं दिया कि वह उन्नति की राह पर आगे बढ़े।

संदर्भ


1. The Holy Qur'an, Translated by A. Yousuf Ali, Published by Amana Corporation, Brentwood, Maryland, 1983
2. Buchari Sharif, Bengali Translation by Maulana Muhammad Mustafizur Rahman, Sulemani Printers and Publishers, Dhaka, Second edition-1999
3. Holy Qur'an, Bengali translation by Maulana Muhiuddin khan,Khademu Harmain Sharifain, Saudi Arabia, Madina Mannwara, 1413 Hijri.
4. The Biography of Muhammad and the Wars (Maghazi) Ibn Isaac,Dr. Sohaul Zakkar, dar Al Fekr

5. The Biography of the Prophet, Ibn Kathir, dar Al Knowledge,Beirut